भारत में आयुर्वेद औषधियों की की सम्भावनायें प्रबल

संवाददाता

दुनियां में प्रतिस्पर्धा की दौड़ में हिन्दुस्तान आयुर्वेद में सबसे आगे जायेगा। यहां एक दिवसीय प्रशिक्षण में राष्ट्रपति भवन हर्बल गार्डन की सलाहकार डा. नलिनी जीते ने आयुर्वेद में उज्ज्वल भविष्य व हर्बल उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया। इस दौरान उन्होंने कहाकि औषधीय पौधों की खेती यद्यपि कोई नई बात नही है। लेकिन इसके द्वारा बड़े-बड़े अचूक नुस्खे व रोगों का खात्मा प्राचीन काल से ही होता आ रहा है।

उन्होंने इसको व्यावसायिक स्तर पर औषधीय पौधों की खेती करने की भी सलाह दी। द्रोपदी ट्रस्ट की चेयरपर्सन नीरा मिश्रा ने कहा कि जागरुकता के बाद प्रशिक्षण के पश्चात रोजगार दिलाने की जिम्मेदारी समूह की होगी। ट्रेनिंग के बाद समूह का गठन कर विभिन्न राष्ट्रीयकृत बैंकों से बित्त पोषित कराया जायेगा। संस्था का लक्ष्य नौजवान महिलाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण देकर रोजगार दिलाना है। ताकि महिलायें आत्मनिर्भर होकर परिवार का भरणपोषण कर सकें। उन्होंने बताकि देश में आयुर्वेदिक पौधों का खजाना और आयुर्वेदिक पौधों उगाकर महिलायें बड़ा मुनाफा कमा सकती हैं।

इस दौरान यूथ वेलफेयर सोसायटी महिला विंग की ओर से अंजली रस्तोगी, प्रशान्त चौहान, नितिन अग्रवाल ने प्रशिक्षणार्थियों को आयुर्वेद की खेती करने के लिये प्रेरित किया।

दुनियां में प्रतिस्पर्धा की दौड़ में हिन्दुस्तान आयुर्वेद में सबसे आगे जायेगा। यहां एक दिवसीय प्रशिक्षण में राष्ट्रपति भवन हर्बल गार्डन की सलाहकार डा. नलिनी जीते ने आयुर्वेद में उज्ज्वल भविष्य व हर्बल उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया। इस दौरान उन्होंने कहाकि औषधीय पौधों की खेती यद्यपि कोई नई बात नही है। लेकिन इसके द्वारा बड़े-बड़े अचूक नुस्खे व रोगों का खात्मा प्राचीन काल से ही होता आ रहा है।

pdfelement

आयूर्वेद में रोजगार के भी अवसर

अंत में उसे एक व्यवसाय की तरह औषधि कृषि के संदर्भ में होने वाले लाभ के साथ-साथ संभावित उतार चढ़ाव के लिए भी तैयार रहना चाहिए। राष्ट्रपति भवन में हर्बल गार्डन की सलाहकार नलिनी गीते ने कहा कि आयुर्वेदिक शास्त्र छह हजार साल पुराना है। यह सही है कि आयुर्वेदिक के महत्व को कोई नकार नहीं सकता, क्योंकि विदेशों में भी आयुर्वेदिक दवाओं की अब पहचान होने लगी है। श्रीमती गीते ने छात्राओं की शंकाओं का समाधान किया। द्रोपदी ट्रस्ट की चेयरपर्सन नीरा मिश्रा ने इस जनपद की उर्वरा भूमि में बहुत सी जड़ी-बूटियां समाई हुई हैं। उन्होंने अफसोस जताया कि अंग्रेजियत छा जाने से आयुर्वेदिक पद्धति का नुकसान हुआ है, लेकिन खुशी की बात है कि अब विदेशों में भी इसके महत्व को समझा जाने लगा है। सुनीता निछावन ने आयुर्वेदिक पद्धति से सेहत को चमकाने के गुर युवतियों को दिए। उन्होंने कहा कि कैमिकलयुक्त कास्मेटिक्स के कारण युवतियों का निखार दब रहा है। इससे पहले कार्यक्रम में आए अतिथियों का यूथ वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष प्रशांत चौहान, नितिन, सचिव अग्रवाल, महिला विंग की अध्यक्ष अंजली रस्तोगी, सचिव रचना त्रिवेदी ने स्वागत किया। छात्राओं ने अतिथियों के सम्मान में स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संचालन राकेश चौहान ने किया।

इस मौके पर क्षमा दुबे, रोली तिवारी, मीनाक्षी गुप्ता, आकाश गुप्ता, सारिका रस्तोगी, वीना कुमारी, मांडवी, शालिनी चौहान, पारुल गुप्ता, दीपिका त्रिपाठी, अर्पणा शुक्ला, गुंजन गुप्ता, बबिता तिवारी, पारुल तिवारी, प्रियंका अवस्थी, विनीता मिश्रा, मेघा अवस्थी, राधा मिश्रा, प्रिया मिश्रा उपस्थित रहीं।

सुझाव दिए : सेमिनार में छात्राओं को जानकारी देते वैज्ञानिक डा. बार्वर, नलिनी गीते, नीरा मिश्रा, सुनीता निछावन।